भक्त हृदय के उद्‌गार..

तुम प्रेरणा दो गर निज तन को, चल कर तव मन्दिर आ जाये।
तुम वक्ता बन के लब पे रहो, तो तेरी आरती गा जाये।।

मन तेरा अरे तुम ही तो हो, क्या कहूँ तुझे इस मन में रहो।
अंग अंग पिया तेरा है, जिस ढंग में चाहो तुम रहो।।

कौन शब्द अब कौन कहे, तुम ही तो सब कुछ कहते हो।
हर भाव में प्रवाह में, अरे तू ही तो राम रे बहते हो।।

'मैं' तो कहीं भी बही नहीं, किसी रंग में रही नहीं।
कर्मण गति तव तन की, 'मैं' किसी ढंग में ढली नहीं।।

कौन पूछे अब कौन है तू, क्या तुम ही तुम को पूछ रहे।
क्या 'मैं' के कारण राम मेरे, राम राम से दूर रहे।।

'मैं' कौन है कौन पूछे, 'मैं' पे तो है कोई यन्त्र नहीं।
'मैं' मेरी अब मिट जाये, 'मैं' पे तो है कोई मन्त्र नहीं।।

'मैं' बन कर क्या तुम ही पिया, अपने पर ही छाये हो।
'मैं मैं' कह कर मैं पर ही, मिथ्या दोष लगाये हो।।

- परम पूज्य माँ

प्रार्थना शास्त्र २/३५४

१०.४.१९६०

अनुक्रमणिका

१. भक्त हृदय के उद्‌गार..

३. आपकी महिमा गा गा कर भी,
गा नहीं पाती हूँ..
श्रीमती पम्मी महता

८. ..सम्पूर्ण निश्चित ही है,
राम कहा ही पायेगा!
'मुण्डकोपनिषद्', द्वितीय मुण्डक १/६

१३. व्यक्तित्व में मौन शालीनता
डॉ. आई.एस. गुप्ता को श्रद्धांजलि

१७. "..समता को ही योग कहते हैं"
श्रीमद्‌भगवद्‌गीता –
बाँसुरी में जीवन धुन, अध्याय २/४८-४९

२२. मुमुक्षु प्रार्थना
परम पूज्य माँ से 'पिताजी' के प्रश्नोत्तर

२८. विनम्र श्रद्धांजलि - डॉ. रघु गैंद के लिए..

३३. निष्काम कर्म,
यज्ञमय कर्म और पूजा अर्थ कर्म
डॉ. जे के महता

३७. अर्पणा समाचार पत्र

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविंद से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल
१३२ ०३७, हरियाणा, भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल १३२ ०३७ ०१, हरियाणा द्वारा दिसम्बर २०२१ को प्रकाशित तथा सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ -८६/१, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-I, नई दिल्ली ११० ०२० द्वारा मुद्रित

आपकी महिमा गा गा कर भी, गा नहीं पाती हूँ..

श्रीमती पम्मी महता

हे श्री हरि माँ प्रभु जी, जितने भी पल आपने अपने मुझे दिये हैं.. वह अनमोल धरोहर की तरह मेरे ज़हन में पड़े हैं! कितनी हसीन यादें हैं उन पलों की.. उम्र भर के लिए! नहीं नहीं, उम्र भर के लिए नहीं.. जन्म जन्म के लिए!

जब तलक पूर्णतया आप ही में समाहित होकर आप में विराम न पा जाऊँ.. आप अनन्त की अपरम्पार महिमा गाते, बस गाते ही रहने को जी चाहता है.. क्योंकि जो छूटा है वह तनत्व भाव छूटा है। अज्ञानता ने उजालों की शरण ली है। अँधेरों ने रौशनाई में सिमट कर ही अपने श्री हरि जगद्जननी माँ के दिव्य दर्शनों का साक्षात्कार किया है!

आपकी महिमा गा गा कर भी गा नहीं पाती हूँ.. क्योंकि इस ज़ुबां के पास इतने अल्फ़ाज़ ही कहाँ जो आपकी शान में कुछ कह पायें! कहे तो अनेक हैं.. सभी भाव व भावनायें श्री चरणन् में धर कर ही नतःश्री बारम्बार होती रहती हूँ!

हे श्री हरि माँ प्रभु जी, जब भी इस मन में दीप जलाया आपने.. 'मैं' ही हमेशा वजूहात (कारण) होती थी उसके बुझने में! आप माँ का न्याय ही आपका निर्णय है।

इसलिए निर्दोष आपका मन, दोष न देकर, मौन स्वीकृति कर लेता.. क्योंकि आपकी परम सत्यता को जान लेने के बाद, हे विभूति पाद श्री हरि माँ, इस कनीज़ की यही बिनती है कि आपका हर कहा सहज स्वभाव है.. इसलिए निरंतर बहता रहता है आपके गंगावत् बहते परम प्रवाह में! यह तो आपका वह चरणामृत है जिसे पीकर फिर कुछ और पीने की इच्छा रहने ही कहाँ देते हैं आप.. याद आ रही हैं आपकी ही गाई ये पंक्तियाँ -

"इच्छा चाहना सब मेरी, तेरी चरण की धूल ही माँगे है।
मन में इक ही लग्न लगी, तेरे चरण की धूलि माँगे हैं।।

राम मेरे तुम कृपा करो, मेरी इन्द्रिय समाधान में।
प्रेम बढ़े तेरी लग्न बढ़े, रहें नित नव तेरे ध्यान में।।"

जानती हूँ मुझ नमानी से कई गुस्ताख़ियाँ हो जाती हैं। वहाँ भी आपकी करुण-कृपा बरसती है। मेरी भूल बता कर आप उसमें revel नहीं करने देते थे। बस इतना ही कहते "forget it, आ आगे चल!"

यूँ कहूँ कि आप तो 'मैं' की याद को इस आंतर से negate करते जा रहे थे जो बहुत जल्द जीव को भ्रमित कर लेती है। मगर जब आप साथ हों और आपके क़दमों से चली रहगुज़र सामने हो तो इस दिव्य व अलौकिक प्रसाद को अतीव विनम्र भाव से ग्रहण करने की ललक को कैसे अनजान बन करी छोड़ सकता है अंतर्मन!

हृदय इसे हर क्षण, हर श्वास से स्वीकार करता हुआ व अतीव विनम्र भाव से ग्रहण करता जाता। जानती थी यह भी, इस 'मैं' की हृदय कुटीर में अँधेरे बसते हैं फिर भी आप उन अँधेरों को क़बूल करके ही अंतर्मन में उतर आते हैं। वक्त के साथ ही जान पाई कि अँधेरे जब दूर होते हैं.. तभी अंतर्मन आपकी ज्योत्सना से भर जाता है!

मेरे हृदय में आपका लिया हर क़दम मुझमें ज्योत्सना भर उसे ज्योर्तिमय करता जाता था। जब हो रहा होता, तब मैं आप ही आपको निहारती रहती, क्योंकि आपने इसके लिए अपने जीवन ग्रंथ को इस हृदय-मन्दिर में बैठ कर ही इसे ग्रहण करवाया व आज भी करवाते चले जा रहे हैं। इसी लिए तो आपका कृपा प्रसाद पाये धन्य धन्य हुई रहती हूँ!

आप माँ को, इसके हृदय की वियोग वेदना का एहसास तो है ही न माँ! इसी विनीत भाव से आप माँ प्रभु जी से बिनती करती हूँ व करबद्ध प्रार्थना करती हूँ, 'हमेशा की तरह

इस वेदना को आप श्री हरि माँ यही आहार देना जो जीवन-पर्यंत आप ही से पाया धारण करी, आप ही आपकी सेवा में समर्पित रहूँ। आप माँ की महिमा से ही यह हृदय सराबोर रहे व आप श्री हरि माँ की चरण वन्दना कर पाऊँ!' आमीन!

हे माँ, हे परम पूज्यनीय माँ, आप ही ने अपनी करुण-कृपा में ला इसे अपनी पूजा का वरदान दिया है। आप ही बताइये माँ, वह पूजा किस काम की.. जो आप ही को न क़बूल हो। इसलिए आप ही से करबद्ध प्रार्थना करती हूँ अतीव विनीत भाव से, इस पूजा को आप ही आशीर्वाद दीजिये.. जो आप माँ के लिए ही, यह जीवन आप ही के राजपथ पर चल दे! हरि ॐ

इस जीवन को जो आपके स्पर्शमात्र से, आपके दिव्य दर्शनों से नवाज़ा हुआ है.. आपकी नज़रेकरम का सदक़ा जिस पर हो और जो स्वयं हाथ पकड़ कर इसे लिवा ले जा रहा हो.. ईश्वर करे, बिना कोई प्रश्न किये बस आप जहाँ जहाँ से भी मुझे गुज़ार कर लिए चलें, गुज़रती ही चलूँ!

आप ही तो हे माँ, सामर्थ्यवान हैं.. इसलिए आप ही से सामर्थ्य पाये करी चलती ही चली जाऊँ। आपकी मुझ पर हुई मेहनतों को तहेदिल से तभी तो उठा पाऊँगी। हे दीनबन्धु दीनानाथ दिनेश, आइये, अपनी कनीज़ पर करम फ़रमाइये और इसे लिवा ले जाइये!

सच मानिये, जब से इस हृदय में आपकी आवाज़ सुनी है - आप ही आप पर तन, मन की निगाहें केन्द्रित हो गई हैं। आप ही की मधुर तान निरन्तर हृदय में गूँजती है। मेरी जीवन-वीणा पर आप ही सुर साधते आये हैं.. कितने प्यार, लग्न व मेहनत से! तभी

तो हृदय-वीणा पर सारे सुर व आरोही-अवरोही आपकी कृपा से ही सजे हुये हैं।

धन्य हैं आप व आप श्री हरि माँ की अद्‌भुत व विलक्षण देन, जो हृदय में व्याप्त हो कर उसे अलंकृत किये हुये है। इसी लिए तो आकुल व्याकुल व अधीर मन आप ही की मधुर वाणी को स्वीकार करने को अधीर हुआ रहता है। आप ही आपको बुलाता रहता है मन ही मन! अल्लाह क़सम, कैसी चाहत अपनी का रंग इस हृदय में भर दिया है.. आपसे पाये इस प्यार ने.. देखिये न माँ, कितना दिलफ़रेब लिबास पहना दिया है.. जो आप, बस आप ही को इत-उत निहारता रहता है।

ईश्वर करे, यही चाहत सदा सदा के लिए स्थायी हुई रहे जो आप माँ प्रभु जी से कभी विलग न हो पाऊँ। अधीर मन की पुकार को ज्यों का त्यों आप ही के श्री चरणन् में असीम अदब व प्यार से धरते हुये, यही विनीत अरदास करती हूँ कि मेरा श्वास-श्वास, मेरा रोम-रोम केवल आप ही को भजता हुआ, जीवन के इस अंतिम पड़ाव में राममय ही हुआ रहे!

हे प्रभु माँ, आप में रह कर ही तो आ पाऊँगी आप में! याखुदाया, मेरे सभी भावों को केवल अपने ही भाव से भरपूर करी रखना जो बाक़ी सभी भावों का अभाव हो जाये। स्वतः ही हे श्री हरि नाथ, इसे यूँ ही अपने से सनाथ करी इसे लिवा ले जाइयेगा। जब आप स्वयं ही करन-कारण है तो फिर इन्हीं आपके श्री चरणन् की शरण में बैठ आप ही आपसे प्रार्थना ही प्रार्थना कर सकती हूँ। इसी लिए इस आर्त पुकार को स्वीकार करी हे हृदयेश्वर, मेरे परमेश्वर, इसे क़बूल लीजिये। सच ही कृतार्थ हो जाऊँगी आपसे!

आप ही करम फ़रमायेंगे अपनी कनीज़ पर.. आपकी दिव्य-दृष्टि से वह सभी बहता देख लूँ जो अपनाये बैठी थी मगर कितनी अनभिज्ञ थी। आप माँ प्रभु जी ने मेरी इस सत्यता को जनवाया, तभी तो जान पाई.. इसी लिये याचना-प्रार्थना करती हूँ कि इस

आंतर के भ्रमित जाल को छिन्न-भिन्न करी इससे निजात दिला दीजिये, जो उस अपनी निजात को सदा सदा के लिए भूल करी अपने मालिक के ही शरणापन्न हुई रहूँ! तभी तो हे दीनबन्धु दीनानाथ, आप से सनाथ हुई वही ग्रहण कर पाऊँ जो आप इसके हृदय-दामन में भरते जा रहे हैं!

ऐसा अवसर न जाने कितने युगों के बाद आया है जो हे नाथ, कतई खोना नहीं चाहती.. आप ही ने इसे द्रष्टाभाव दिया है, जो स्वयं को दूर से देखते हुये गुज़रती चलूँ क्योंकि जो अपने प्यार के रंग से इसे रंगा है वही रंग इतना पक्का हुआ रहे कि और कुछ भी पाने की चाहना ही न रहे। आप ही आप में मिट कर आपकी ही हो जाऊँ।

हे प्रभु जी, योग साधना के अपने क़दमों को इसमें बढ़ाइये जो आप ही आप इसे चलते नज़री आयें.. क्योंकि आपके मुबारक क़दम जिस मनोधरा पर भी पड़ते हैं वही धरा आपके मन्दिर का रूप धर लेती है और आप स्वयं उस मनमन्दिर के भगवान वहीं विराज जाते हैं और अपने साधक को साधना के पथ पर अग्रसर होने के लिए किस क़दर प्रेरित करी लिये ही जाते हैं.. जो आप ही आपकी हर शै व जीव में दर्शन हो पायें! आप ही आप माँ व्यक्त कीजिये स्वयं को! अव्यक्त जब स्वयं को सगुण वेष में उतर कर व्यक्त करते हैं.. तभी पता चलता है कि जीवन कैसे जीया जाता है!

कितने साधारण व सरल हैं आप, मगर कितने असाधारण हैं.. आपका हर क़दम जीवन का ऐसा मुबारक क़दम है जो आप दूसरे के जीवन को जीवत्व भाव से उठा कर परमात्मा से जोड़ देते हैं। कितने प्यार से अपने में सुरक्षित कर लेते हैं साधक भाव को! यही भाव पुष्टित व पल्लवित होता है आप माँ प्रभु जी से! ईश्वर करे, यह साधक भाव परम पूज्यनीय भाव में आ कर ही आपके शरणापन्न हुआ रहे - हरि ॐ

..सम्पूर्ण निश्चित ही है,
राम कहा ही पायेगा!

गतांक से आगे-

तस्मादृचः साम यजूंषि दीक्षा यज्ञाश्च सर्वे क्रतवो दक्षिणाश्च।
संवत्सरश्च यजमानश्च लोकाः सोमो यत्र पवते यत्र सूर्यः।।

मुण्डकोपनिषद - २/१/६

शब्दार्थः

उस परमेश्वर से ही ऋग्वेद की ऋचाएँ सामवेद के मन्त्र यजुर्वेद की श्रुतियाँ और दीक्षा तथा समस्त यज्ञ क्रतु एवं दक्षिणाएँ तथा संवत्सर रूप काल यजमान और सब लोक उत्पन्न हुए हैं; जहाँ चन्द्रमा प्रकाश फैलाता है और जहाँ सूर्य प्रकाश देता है।

तत्व विस्तारः

ऋग्वेदी ऋचायें सभी, सामवेदी मन्त्र सभी।
सामवेदी मन्त्र विधि, परम पुरुष ने ही है कही।।१।।

यज्ञ कर्म अनुष्ठान की, विधि उन्होंने है कही।
नियम व्रत जो यज्ञ में लो, वह दीक्षा उन्होंने कही।२।।

शास्त्र शब्द ही ना समझो, पूर्ण क्रिया ही शास्त्र रे है।
प्रत्यक्ष विश्व जो देख रहे, प्रतिमा-ए वह शास्त्र रे है।।३।।

वेदन् में जग ज्ञान दिया, पूर्ण विश्व का मन्त्र दिया।
किस विध क्योंकर क्या होये, पूर्ण रूप सों है रे दिया।।४।।

कर्तृत्व भाव तब ना रहे, इस कारण वह कहते हैं।
निर्माता बस परम है, सत्त्व राज़ रे कहते हैं।।५।।

ज्ञान स्वरूप रे वह ही है, ज्ञान दीक्षा वह ही दे।
जीवन यज्ञ रे सफल भये, जीवन शिक्षा वह ही दे।।६।।

विश्व रूप है हवन कुण्ड, संकल्प अग्न वा जल रही।
जीवनाहुति देनी है, परम समिधा जल रही।।७।।

श्रुति ऋचायें छन्द मन्त्र, जीवन में ही बढ़ते हैं।
श्वास आहुति शुभ्र रे हो, यह ही यहाँ पर कहते हैं।।८।।

दक्षिणा की विधि कहें, कर्म विधि भी संग कहें।
यज्ञ जो शास्त्रण में कहें, जीवन राहें ही तो कहें।।९।।

विभाजित जीवन काल करे, रात दिन फिर वर्ष कहें।
आश्रम विभाजन भी करे, क्या कब हो स्पष्ट कहे।।१०।।

यज्ञमान सों यह समझूँ, कहें किसे क्या करना है।
किस यज्ञ का जीवन में, किसको 'होता' बनना है।।११।।

फलस्वरूप यह जग सारा, यज्ञ किये जो पायेगा।
सम्पूर्ण निश्चित ही है, राम कहा ही पायेगा।।१२।।

प्राण सूर्य और रयि चाँद, विस्तृत क्योंकर रे होगा।
परम पुरुष परमात्म का, संकल्प जो है वही होगा।।१३।।

चान्द सूर्य प्रकाश का, अर्थ यही अब माने हूँ।
दृष्टा जग प्राण विस्तार, प्रकाश ही है जाने हूँ।।१४।।

पर आधार वह और है, प्रकाश जन्म दे और है।
सत्ता सार वह और है, प्रकट अप्रकट वह और है।।१५।।

स्थूल रूप वह आप धरे, सूक्ष्म आप ही धरता है।
कारण रूप कर्मफल सों, प्रेरित सूक्ष्म ही करता है।।१६।।

जहाँ चन्द्रमा (रयि) प्रकाश फैलाता है

सूक्ष्म ही स्वभाव बने, भाव वहीं पर बनता है।
स्थूल रूप में यज्ञ रूप, भाव प्रवाह वह बनता है।।१७।।

सूक्ष्म विधि देख्र री, राम ने सब बता दिया।
द्वौ मन्त्रन् में राम रे, सत्त्व राह सुझा दिया।।१८।।

बाह्य जगत जो दीख्रे है, बिम्ब मात्र जग सारा है।
प्रथम संसरणा अग्न का, स्फुलिंग अंग यह सारा है।।१९।।

हर जीवन की आहुति है, संकल्प अग्न में दी जाये।
वेदन् में जो मन्त्र कहे, विधिवत् ही रे कहे जायें।।२०।।

तू कहे तू ही रे कर्ता है, वह कहें नहीं रे नहीं नहीं।
तू कहे यह जीवन तेरा है, वह कहें रे नहीं नहीं।।२१।।

स्थूल को था अपना लिया, सूक्ष्म रूप भी वह भया।
कारण तन भी जो रे था, वह भी उसका ही तो भया।।२२।।

स्वप्न है वह अरे जागृत भी, सुषुप्ति भी तो वह ही है।
स्थूल कारण सूक्ष्म भी, पूर्ण ही तो वह ही है।।२३।।

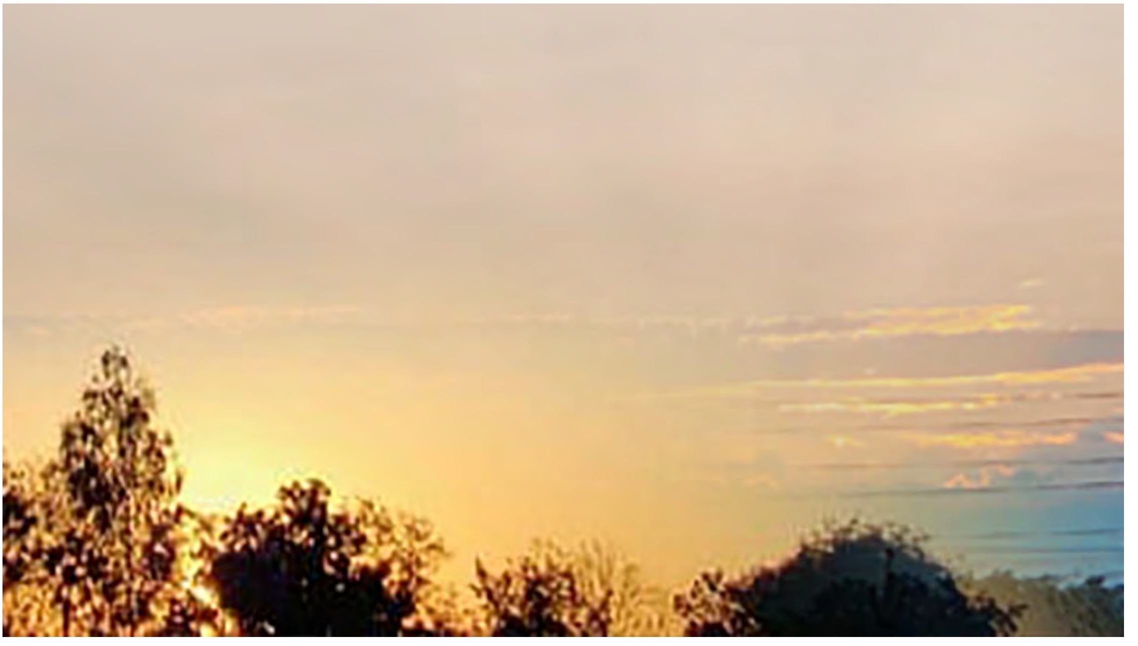

और जहाँ सूर्य प्रकाश देता है।

उत्पत्ति स्थिति कह लो, लय भी तो वह ही है।
महाभूत तन्मात्रा भी, प्रकृति भी तो वह ही है।।२४।।

पृथ्वी लोक और आन्तर भी, द्यूलोक भी वह ही है।
विश्व रूप हिरण्यगर्भ, ईश्वर तत्व रे वह ही है।।२५।।

विश्व तैजस प्रज्ञा भी, तम रज सत्त्व रे वह ही है।
सबसे परे वह जान लो, परम सत्त्व रे वह ही है।।२६।।

श्रवण ध्यान समाधि कहूँ, शास्त्र गुरु आत्म कह लूँ।
नेत्र मन और हृदय कहो, बाह्य आन्तर मौन कह लूँ।।२७।।

मुदितमनी आनन्द कहें, फल भोगी द्रष्टा रे कहूँ।
तन स्वभाव कर्माशय भी, जो चाहो वही रे कहूँ।।२८।।

पूर्ण ही वह कहते हैं, अखण्ड रस इक राम है।
जो है सब कुछ बस जानो, एक तत्व मेरे राम हैं।।२९।।

कर्म है वह और कर्म गति, कर्म कर्ता भी राम है।
बाह्य जग जो दीखे है, पूर्ण ही बस राम है।।३०।।

अद्वैत तत्व मेरे राम हैं, वह परम तत्व मेरे राम हैं।
अक्षर ब्रह्म रे राम हैं, अव्यक्त सत्त्व मेरे राम हैं।।३१।।

ज्ञान स्वरूप परम चेतन, प्रकाश रूप मेरे राम हैं।
सत्त्व स्वरूप परम ब्रह्म, विश्व रूप मेरे राम हैं।।३२।।

बाह्य लोक की बात कहें, पूर्ण जग यह राम हैं।
आप ही सारे रूप धरें, जान ले बस सब राम हैं।।३३।।

उत्पत्ति कारण उन्हें कहें, महा कारण राम हैं।
रयि सूर्य को जन्म दें, बीजप्रद बस राम हैं।।३४।।

सर्व ऋचायें वेदन् की, सर्व विधि भी राम हैं।
सच तो यह हर जीवन ही, मन्त्र रूप में राम हैं।।३५।।

निश्चित कर्म है हर तन का, यह समिधा ही होती है।
राम राज्य में जान ले, राम कही ही होती है।।३६।।

जग लीला है राम की, जग क्रीड़ा है राम की।
हर काज कर्म जो दीखे है, जन्म कारण है राम की।।३७।।

यही समझायें बार बार, अरे साधक अब तू समझ ले।
अखण्ड रस इक राम है, सार रे अब तू समझ ले।।३८।।

वह कालातीत अरे काल परे, काल जन्म दे वह ही है।
निर्गुणिया अरे गुण परे, गुण जन्म दे वह ही है।।३९।।

निराकार है सर्वाकार, सर्वाधार रे वह ही है।
अखण्ड रस अद्वैत वह, सर्वाधार रे वह ही है।।४०।।

सर्वात्म वह विश्वेश्वर, विश्वरूप भी वह ही है।
विश्वपति वह जगदेश्वर, सर्वरूप भी वह ही है।।४१।।

सर्व सम्पन्न सर्व परे, जान सके तो जान ले।
परम मौन है परम मेरा, मौन होई कर जान ले।।४२।।

राम तत्व जिज्ञासु तू, राम होई कर जान ले।
मिलन की राहें नाम ही हैं, तू नाम में खो कर जान ले।।४३।।

१०-९-६१

डॉ. इन्दर सागर गुप्ता -
व्यक्तित्व में मौन शालीनता

श्रद्धांजलि - आभा भंडारी

..होठों पर ख़ुशी की वो प्यारी सी मुस्कान

..स्वागत करती उनकी आँखों में वो चमक

..बीते लम्हों की ख़ूबसूरत यादें

..और हमेशा ही वो दुआएं जो उनसे मिलीं..

..मेरे स्वागत में प्रिय इन्दर अंकल द्वारा मेरे हाथ पर हलका सा चुम्बन

..अब, सी-38 फ्रेंड्स कॉलोनी, नई दिल्ली में मेरा जाना पहले जैसा मुझे कभी महसूस नहीं होगा।

प्रिय राज आंटी एवं इन्दर अंकल से अपने माता पिता जैसा प्यार पाकर मैं स्वयं को धन्य महसूस करती हूँ। उनके हृदय की उदारता एवं गर्मजोशी मेरे आन्तर को छू लेते हैं.. हर बार जब मैं उनके घर में प्रवेश करती हूँ.. उनका प्यार एक ऐसा प्यार है जो बदले में कुछ नहीं चाहता.. जो अत्यन्त उदार है.. जैसे कि वे स्वयं हैं।

इन्दर अंकल पर 'थे' शब्द लागू ही नहीं हो सकता.. क्योंकि उनकी उपस्थिति सदैव महसूस होती रहेगी.. सदा ही। उनकी उपस्थिति का एहसास उनके आन्तरिक बड़प्पन से है.. सभी के प्रति उनका सम्मानजनक व्यवहार। इसलिए इसमें आश्चर्य की तो बात ही नहीं कि उन्होंने जीवन में जो कुछ भी किया वह उत्कृष्ट ही था। एक डॉक्टर के रूप में वह अत्यन्त दयालु और आश्वसन देने वाले थे। एक प्रख्यात ई एन टी सर्जन, जिनका सम्पूर्ण चिकित्सा जगत में बहुत सम्मान था।

मुझे याद आता है कई वर्ष पहले का एक अवसर, जब एक डॉक्टर ने परम पूज्य माँ की जाँच करके हमें बताया कि उन्हें शायद गले का कैंसर है.. मैं अपने दिल में इस भयानक तनाव के साथ घर नहीं लौटना चाहती थी.. इसलिए हम ने सीधे इन्दर अंकल के पास जाने का निर्णय किया.. और वो भी बिना किसी पूर्व अपॉइंटमेंट के! उन्होंने बहुत श्रद्धा और प्रेम के साथ माँ का स्वागत किया एवं पूरी तरह जाँच करके हमें तुरन्त आश्वस्त किया, 'यह कैंसर नहीं है.. वोकल कॉर्ड्स (Vocal cords) पर एक गाँठ है..' उनका निदान इतना निश्चित था कि इससे हमारे भीतर का आन्तरिक तनाव पूरी तरह से समाप्त हो गया! इसके लिये मैंने स्वयं को हमेशा उनका ऋणी महसूस किया है!

उनकी और मेरी जन्मतिथि एक ही होने के कारण भी मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानती हूँ.. जिससे मुझे मेरे उस विशेष दिन पर उनका आशीर्वाद मिलना सुनिश्चित हो जाता था। वह मुझे देख कर कहा करते थे.. “आभा द ग्रेट.. तुम्हें देख कर कितना अच्छा लगा।” ‘द ग्रेट’ शब्द से मैं असहज महसूस किया करती थी.. फिर मुझे एहसास हुआ कि वह अपने सभी बच्चों और पोते-पोतियों के लिये इस विशेषण का इस्तेमाल किया करते थे। यह उनके स्नेह का प्रदर्शन था। उनके आशीर्वाद के बिना मेरा वह खास दिन फिर कभी खास महसूस नही होगा!

जिस प्रकार वह अपने बाग़-बग़ीचे में पौधों की देखभाल करते थे, उसी प्रकार उन्होंने अपने प्रत्येक बच्चे और पोते-पोतियों को बेहतरीन मानवीय मूल्य सिखाये.. यह कोई आश्चर्य नहीं कि उनका परिवार असाधारण है.. क्योंकि उनसे तो प्रत्येक को विरासत में मिली है.. अपने आप को देने की कला, उदारता की, प्रेम की और बड़प्पन की.. इससे बड़ा उपहार वह इस दुनिया को और क्या दे सकते थे!

कुछ वर्षों से, जब वह व्हीलचेयर तक ही सीमित रह गये थे, उनका मिलनसार स्वभाव एवं उनकी देने की भावना बेमिसाल थी.. मुझे याद है एक दिन मैं उन्हें मिलने फ्रेंड्स कॉलोनी गई, वहाँ पर मुझे बताया गया कि वे लोकल ‘मदर डेयरी बूथ’ से १०० आइसक्रीम ख़रीद कर वंचित बच्चों, अपने सेवादारों एवं उस समय उन्हें जो भी पार्क में मिला, सभी में बाँट कर आये थे। कितना सहज था उनका व्यक्तित्व एवं उनकी उदारता..

..जो अपने आप को भूल कर दिल्ली की ठिठुराने वाली भयानक सर्दी में भी अपने प्रिय बेटे की मीठी डाँट को नज़रअंदाज़ करके, अपनी सेहत को जोखिम में डाल कर भी चले गये!

उनके परिवार को उनका सबसे बड़ा योगदान था उनका मौन, परन्तु ठोस समर्थन एवं पोषित करने वाले उनके सुन्दर और मानवीय गुण! पिछले १५ वर्षों से उनके घर पर अर्पणा की हैंडीक्राफ्ट की सेल लगा करती थी, उनके समपूर्ण समर्थन एवं आशीर्वाद के साथ.. कोई आश्चर्य नहीं था कि ग्रामीण महिलाएं जो इस बिक्री से लाभान्वित होती हैं, उनके इस परोपकार के लिये उनके परिवार को हार्दिक आभार और धन्यवाद देती हैं।

मुझे कोई सन्देह नहीं कि भगवान जी उन्हें जहाँ भी ले जायेंगे, वह फिर से प्रेम और स्वयं को देने के अपने गुण को ऐसे ही बनाये रखेंगे।

फिर मिलेंगे प्रिय इन्दर अंकल.. भगवान ने चाहा तो मैं शायद फिर से आपके साथ जन्मदिन साझा करने का सौभाग्य पा सकूँगी।❖

“सिद्धि असिद्धि में सम होकर,
तू कर्म कर,
..समता को ही योग कहते हैं”

योगस्थः कुरु कर्माणि संङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।

श्रीमद्भगवद्गीता - २/४८

भगवान कृष्ण कहते हैं अर्जुन!

शब्दार्थ :

१. संग छोड़ कर,
२. योग में स्थित होकर,
३. सिद्धि असिद्धि में सम होकर,
४. तू कर्म कर,
५. समता को ही योग कहते हैं।

१५. जब तू स्वरूप स्थित हो जायेगा,

१६. जब तू निज नाम और रूप से रहित हो जायेगा,

१७. जो भी ज्ञान पाया है, जब तू उसका स्वरूप ही हो जायेगा,

तो समत्व भाव में आ ही जायेगा।

योग :

१.मिलन को योग कहते हैं।

२. एकरूप जब हो जाये, उसे योग कहते हैं।

३. जब 'मैं' 'तू' का भेद नहीं रहे तो उसे योग कहते हैं।

४. जब अपने साध्य से कुछ भी पृथकता नहीं रहे तो उसे योग कहते हैं।

५. ज्ञान दिया जो श्याम ने, उसकी प्रतिमा जब हो जायें, उसे योग कहते हैं।

क) जब तूने तन से नाता ही छोड़ दिया सिद्धि असिद्धि फिर किसकी हुई?

ख) मन ही जिस पल नहीं रहा, तब सिद्धि से संग कौन करेगा?

ग) जब तेरा कुछ भी नहीं रहा, तू किससे, कैसे संग करेगा?

घ) जब मन से संग ही नहीं रहा, तब मान-अपमान किसका हुआ?

ङ) बुद्धि गुमान जब चला गया, तब तुम्हारी कोई न माने तो क्या हुआ?

जीवन में अपना उद्देश्य गया, फिर कर्मफल तो दूर रहा, मानो वह जीना ही भूल गया यानि व्यक्तिगत जीवन ही भूल

तत्व विस्तार :

समत्व भाव :

सिद्धि असिद्धि में समता कब आयेगी?

१. जब तन से संग ही नहीं रहेगा,

२. जब तनत्व भाव ही नहीं रहेगा,

३. जब तेरा तन संग ही नहीं करेगा,

४. जब तेरी तनो स्थापना की चाहना ही नहीं रहेगी,

५. जब मन से संग ही नहीं रहेगा,

६. जब तेरे मान-अपमान की बात ही मिट जायेगी,

७. जब विजय-पराजय के प्रहार तुझ पर घात न कर सकेंगे,

८. जब मन तुझे राहों में रोक न सकेगा,

९. जब अहंकार ही नहीं रहेगा,

१०.जब कोई पुकार ही नहीं रहेगी,

११.जब कोई चाह ही नहीं रहेगी,

१२.जब जग से कोई प्रयोजन नहीं रहेगा,

१३.जब अपनी याद ही नहीं रहेगी,

१४.जब तू आत्मवान हो जायेगा,

चुका है, क्योंकि वह तनत्व भाव से दूर हो गया है। यही परम योग की स्थिति है। उसकी तद्रूपता अब तन से नहीं रही, अब उसकी तद्रूपता मानो आत्मा से हो गई। उसने जड़ से नाता तोड़ कर मानो चेतन तत्व से नाता जोड़ दिया।

जब जीव आत्मा में खो जाता है तब वह अपने तन तथा संसार के प्रति समभाव में स्थित हो जाता है। फिर उसे परवाह नहीं होती कि उसके तन को क्या मिला, या क्या नहीं मिला। वह द्वन्द्वों के प्रति उदासीन होता है।

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनञ्जय।
बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः।।

श्रीमद्भगवद्गीता - २/४९

अब भगवान पुनः बुद्धि के योग को सराहते हुए कहते हैं!

शब्दार्थ :

१. हे अर्जुन! बुद्धि योग से कर्म निस्सन्देह न्यून हैं।
२. तू बुद्धि की शरण ग्रहण कर।
३. क्योंकि फल के हेतु कर्म करने वाले अति कृपण होते हैं।

तत्व विस्तार :

भगवान बुद्धि के स्तर पर परमात्मा से योग की श्रेष्ठता बताते हैं।

भगवान मानो कह रहे हों कि :

क) यदि तुम्हारी बुद्धि सत्त्व तत्व को जान गई, तब तुम्हारा आत्मा से योग आसान हो जायेगा।
ख) यदि तुम्हारी बुद्धि विवेकपूर्ण हो जाये, तब तुम्हें यह समझने में कठिनाई नहीं होगी कि तुम आत्मा ही हो।
ग) यदि बुद्धि सत्त्व तत्व सार को समझ गई, तो तुम्हारा कर्मों से संग मिट जायेगा।
घ) जब बुद्धि ने यह जान लिया कि तुम तन नहीं हो, तब तनत्व भाव त्याग भी सहज में हो जायेगा।
ङ) गर बुद्धि मन की नौकर न बने, तो मन भी परम मिलन की राहों में बाधा नहीं बन सकेगा।
च) धर्म तथा अधर्म की गर समझ ही न आये, तो धर्म का जीवन में अनुष्ठान भी कैसे कर सकोगे?

इसलिये भगवान कह रहे हैं कि :

१. अपनी बुद्धि को बुलन्द करो ताकि सत् समझ तो आ जाये।
२. गर आपकी बुद्धि ही सत् को न माने तो आपके मन को कौन समझायेगा?
३. तनत्व भाव त्याग बुद्धि के संयोग के बिना नहीं हो सकता।
४. संग भी बुद्धि संयोग बिना नहीं छोड़ पाओगे।

५. बुद्धि ही आपको सत् दर्शा सकती है।

६. गर बुद्धि गौण हो गई तो मनो राज्य हो जायेगा।

७. गर बुद्धि योग नहीं हुआ, तो :

क) जीवन यज्ञमय न बना सकोगे।

ख) निष्काम कर्म न कर सकोगे।

ग) कर्तव्य भी नहीं निभा सकोगे।

८. मन तो भड़क भी जाता है, बुद्धि ही इसे शान्त कर सकती है।

९. बुद्धि को अपने ही मन को मनाना होता है।

१०. अनेक बार नीति की राह से भी मन को रिझाना होता है।

११. मन जब भी अपमान न सह सके, यदि बुद्धि इसे बहुत यत्न से समझाये तब मन उस अपमान की परवाह नहीं करता।

१२. बुद्धि यदि ज्ञानपूर्ण और मेधावी हो तब ही वह मन को शान्त कर पायेगी, वरना बुद्धि भी मन के साथ विभ्रान्त हो जायेगी।

१३. साधक की बुद्धि ही एकाग्रचित्त हो सकती है।

१४. बुद्धि ही मन को अपने में लय कर सकती है।

यह योग गर सफल हो जाये तो बुद्धि की बात भी कौन करेगा? क्योंकि तब तो बुद्धि भी परम में लय हो जायेगी।

कर्म :

१. कर्म तुच्छ हैं, यह नहीं कह रहे।

२. कर्म बुद्धि से गौण हैं, यह कह रहे हैं।

३. कर्म बुद्धि के अनुवर्ती होने चाहियें।

४. कर्मों में बुद्धि प्रधान होनी चाहिये, यह कह रहे हैं।

५. गर कर्म मन के चाकर हुए तो व्यक्तिगत तथा स्वार्थपूर्ण हो जायेंगे।

६. गर कर्म रुचि के चाकर हो गये तो अत्याचारपूर्ण हो जायेंगे।

७. गर विषयों से संग हो गया तो न्याय भी भूल जायेगा।

८. कर्म गर विषयों के चाकर हो गये तो अनेकों अनर्थ करेंगे।

९. गर बुद्धि रहित कर्म प्रधान हुआ तो कर्तव्य भूल ही जायेगा और विभ्रान्तमनी हो जायेगा।

नन्हीं! कर्म बुद्धि के अधीन होने चाहियें। यदि कर्म बुद्धि की उपेक्षा करके किये जायें तो ग़लत हो जाते हैं। जब बुद्धि का आत्मा से संग हो जाये और मन पर राज्य हो जाये, तब 'व्यवसायात्मिका बुद्धि' का जन्म होता है। इस कारण भगवान कहते हैं अर्जुन को कि तू :

क) बुद्धि की शरण में जा।

ख) जो बुद्धि कहे उसका अनुसरण कर।

ग) मनोरुचि और मनो मान्यताओं को अपनी राहों में न आने दे।

घ) बुद्धि उचित और अनुचित का भेद समझ सकती है।

ङ) गर बुद्धि का संग आत्मा से है और मन बुद्धि की मानने वाला बन जाये तब जीव भगवान को पा ही लेगा।

च) बुद्धि गर सतमय हो और मन उसकी माने तो साधक तनत्व भाव को सहज में ही छोड़ सकता है।

छ) मनोसंग गर सत् से हो जाये और बुद्धि शास्त्र कथित मन्त्रों को अक्षरशः मान ले, तो जीव पल में आत्मवान बन सकता है।

तब कर्मों से फल की चाहना की बात नहीं होगी, तब सम्पूर्ण कर्म यज्ञमय होंगे। तब सम्पूर्ण कर्म धर्मयुक्त ही होंगे। तब जीव का जीवन यज्ञमय ही होगा।

कर्मों का त्याग करने को भगवान ने कहीं नहीं कहा। यदि कर्मों में 'मैं' और मन प्रधान हुआ तो कर्मः

१. रुचि और अरुचि पर आधारित होंगे,
२. कामना पर आधारित होंगे,
३. लोभ पर आधारित होंगे,
४. मोह पर आधारित होंगे,
५. अहंकार पर आधारित होंगे,
६. मान की चाहना पर आधारित होंगे,
७. अज्ञानता पर आधारित होंगे।

भगवान कहते हैं फल के इच्छुक लोग कृपण होते हैं, लघु होते हैं, विवेकहीन होते हैं, निर्धन तथा कृपा के पात्र होते हैं, अत्यन्त दीन और दुःखी होते हैं।

नन्हीं! वे लोग तो जीवन भर अपने से बेगाने हो जाते हैं और अपने को बिन जाने ही मर जाते हैं।

दूसरी ओर बुद्धि योग का अभ्यास करते करते एक दिन साधक आत्मवान बन जाता है।

कर्म को मन या बुद्धि ही प्रेरित करती है इसलिये कर्म बुद्धि से न्यून ही होते हैं, किन्तु कर्म ही जीव को पावन भी करते हैं। यह सब तो कर्म की प्रेरक शक्ति के गुणों पर आधारित है कि कर्म निष्काम हैं या कामनापूर्ण फल की चाहना से परिपूर्ण हैं।❖

मुमुक्षु प्रार्थना

पिता जी

कहा जाता है, जीव भगवान की रचना में सबसे ऊँची पदवी रखता है.. भगवान ने उसे अपने जैसा ही बनाया है। पर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान ने इस संसार में पैदा करके जीव को समुद्र में फेंक दिया है। न हमें कोई आर मालूम होता है न पार.. न हम जानते हैं लक्ष्य क्या है या कहाँ जाना है, क्या करना है, क्या नहीं करना..

अनेकों संत और शास्त्र मौजूद हैं, पर सबके ख़यालात में फ़र्क़ है, किसके अनुसार चलें? कुछ समझ नहीं आता.. कैसे पार उतरें? ऐसे लगता है कि भगवान ने हमें कोई ज्ञान नहीं दिया, अंधकार में पड़े हैं। यह संशय कैसे दूर हों और सत्य मार्ग कैसे प्राप्त करें?

पिता जी की ओर से प्रार्थना
पूज्य माँ :

राम तूने यह लोक रचा, विभिन्न रूप तूने आप धरे।
अनेक नाम अनेक बुत, ब्रह्माण्ड में तूने धर दिये।।१।।

जीव को तू श्रेष्ठ कहे, तेरे शास्त्र कहते आये हैं।
अबोध आज तोरे चरण पड़े, तुझको पूछन आये हैं।।२।।

जीवन सारा बीत गया, अभी सत्य समझ न पाये हैं।
विभिन्न शास्त्र में भिन्नता, राम देखते आये हैं।।३।।

भवसागर मनोसागर में, मन यह डूबा जाये है।
पर तेरा राज़ राम सुनो, अभी समझ नहीं आये है।।४।।

आकुल मन व्याकुल रहे, न जाने को' लक्ष्य मेरा।
न जाने अब किस विधि, अमरत्व मैं पाऊँगा।।५।।

न समझूँ है सत्य क्या, तेरा रूप अभी न समझा।
इस आयु में न समझा, तो श्रेष्ठ कहाँ था जन्म मेरा।।६।।

शास्त्र पाछे राज़ है जो, वह अभी खुल नहीं पाया है।
यह मन मेरा सुन राम मेरे, तुझको देख नहीं पाया है।।७।।

वाक् सुनी सुनी भरमाया, बहु शास्त्रन् के मैंने वाक् पढ़े।
बहु धर्म के सन्त, राम, बार बार मैंने देख लिये।।८।।

अब अपनी बात बताओ मुझे, आओ आओ तुम आ जाओ।
अज प्यासी अखियाँ दर्शन को, तरसें दरस दिखा जाओ।।९।।

राम मेरे गर आ जाओ, दीदार मुझे तेरा हो जाये।
तुझ को देखूँ जिस पल मैं, मेरा प्यार तुझी से हो जाये।।१०।।

नयन से जब नयन मिलें, वास्तविक रूप मैं जानूँगा।
करुणा नयन से जब बहे, तब ही तुझे पहचानूँगा।।११।।

वाक् से प्यार मुझको है, तेरे शास्त्रन् से मोरी प्रीत है।
मैंने वही किया इस जग में, राम जो जग की रीत है।।१२।।

दीदार तेरा नहीं हुआ, इस कारण नहीं हुई जीत है।
तू मिली मिली बिछुड़ गया, क्या यही प्रीत की रीत है।।१३।।

हर रूप में जब जब तू, अवतार बनी के आये हो।
सोचूँ सोचूँ देखूँ राम, तुम प्यार बनी के आये हो।।१४।।

करुणा बनी दया बनी, झुकाव बनी के आये हो।
सत्य प्रतीक तू बनी आये, भाव बनी के आये हो।।१५।।

हर ही रूप जो देखा है, वाक् की नहीं बात कहूँ।
वाक् पाछे जो तू है, तोरे कर्म के भाव कहूँ।।१६।।

दिनचर्या में रूप धरी, तुम मुझे रिझाने आये हो।
बार बार मैं जाने हूँ, मुझे सत्य सुझाने आये हो।।१७।।

मैं वाकन् में ही पड़ा रहा, तेरा सत्य समझ नहीं पाया।
प्रेम रूप जो तेरा है, वह देख के देख नहीं पाया।।१८।।

आज चरण में बैठ करी, कहूँ नयन मोरे खोल दो।
घूँघट जो मैं पहरे हूँ, निज कर से रामा खोल दो।।१९।।

तुझे प्यार करूँ और झुक कर के, तेरी शरण में आ जाऊँ।
भुजा फैला हे राम मेरे, तेरी आग़ोश में आ जाऊँ।।२०।।

वाक् भूल के सुन हे राम, तत्व तेरा पहचान लूँ।
तू प्रेम रूप तू सत्त्व रूप, तव वास्तविकता मैं जान लूँ।।२१।।

हर रूप भी जिसमें आये हो, सत्य ही लेकर आये हो।
बार बार तू प्रेम का, रूप बनी के आये हो।।२२।।

निरास हुआ पुकारूँ तुझे, सामने आ और दरस दिखा।
शब्दन घूँघट उठा करी, दीदार तू अपना दे के जा।।२३।।

तब समझें जो समझे न, वास्तविकता तब समझ लूँ।
जो तू है राम मेरे, तेरी सत्यता मैं समझ लूँ।।२४।।

मेरा मन मुदित हो जायेगा, वह तो बलि बलि जायेगा।
आन्तर में सुन राम मेरे, तेरा आसन लग जायेगा।।२५।।

दिनचर्या में जानूँ राम, तव प्रेम स्वतः बह जायेगा।
सत्य प्रकट तेरा ही, इस तन राही हो जायेगा।।२६।।

सो राम राम मैं राम कहूँ, राम कही के पुकारे हूँ।
शास्त्रन् को नहीं वाक् नहीं, मैं आज तुझे ही पुकारे हूँ।।२७।।

तुझे जानूँगा तब सत्य का, आवाहन राम मैं कर लूँगा।
राम को सुन हे राम मेरे, निज हृदय में आप ही धर लूँगा।।२८।।

आज तलक मैं शुष्क शब्द, चरण चढ़ाता आया हूँ।
शास्त्र कथित सब मंत्र राम, तुझे सुनाता आया हूँ।।२९।।

तेरे मन्त्र तुझी को सुनाये, या ऋषिगण के मैंने मंत्र कहे।
अपनी भावना अपने भाव, प्रकट नहीं कभी मैंने करे।।३०।।

अब अपनी बात मैं राम कहूँ, समझ के समझ मैं नहीं सका।
अनुभवगम्य तू राम है, इस पल तो इतना समझ रहा।।३१।।

तू शब्द राही तो नहीं मिले, तू रूप राही भी नहीं मिले।
स्थूल में तुझको हेर थका, यहाँ पे भी तू नहीं मिले।।३२।।

शास्त्रन् ने भी यह कहा, बुद्धि से है तू परे।
देख लो बुद्धि मेरी यह, इसका राज़ नहीं समझ सके।।३३।।

जो बुद्धिगम्य है नहीं नहीं, जो बुद्धि में नहीं आ सके।
लाख यत्न करे बुद्धि, तेरा राज़ कभी नहीं पा सके।।३४।।

यह जानी मैं राम कहूँ, इन शब्दन में अब नहीं पडूँ।
तव प्राकट्य जो जब हुआ, जहाँ हुआ उसे देख तो लूँ।।३५।।

पर कैसे कैसे कैसे राम, अब कैसे देख मैं पाऊँगा।
गर करुणा तेरी हो जाये, तब ही देख मैं पाऊँगा।।३६।।

नयनन में तुझे बिठाये करी, मैं नयनन पुतरी मूँदूँगा।
आँख में आसन तव धरी, तुझे भावना राही पूजूँगा।।३७।।

प्राकट्य तेरा हो न हो, सत्य मैं जान ही जाऊँगा।
तब ही जानूँगा इसको, जब सत्य आप हो जाऊँगा।।३८।।

सुन हे राम अज तुझे कहूँ, नयन मिलाने को जी चाहता है।
तुझे पाने को जी चाहता है, तेरा बन जाने को जी चाहता है।।३९।।

सो चरण पड़ी दामन फैला, राम राम मैं राम कहूँ।
आज मुझे तोरी प्यास लगी, प्रेम भाव से राम कहूँ।।४०।।

आयु तन की गर देखूँ, घबरा करी मैं राम कहूँ।
कुछ पल मेरे बाक़ी हैं, वह पल देखूँ तो तड़प पडूँ।।४१।।

राम नाम ही सत्य राम, बहु बार सुनूँ और भड़क पडूँ।
मोहग्रसित हुआ न समझूँ, तो तुम ही कहो मैं क्या करूँ।।४२।।

बिन भाव भरे जब नाम मैं लूँ, पत्थर से बन जाते हैं।
नाम लड़ी में गूँथूँ फूल, वह गंध रहित रह जाते हैं।।४३।।

तुझसे कहूँ अज राम कहो, वहाँ भाव क्योंकर भर पायें।
गर भाव नहीं उठें मन में, तो हम जैसे किधर जायें।।४४।।

हेर हेर तू नहीं मिला, शुष्क नाम तेरा बह गया।
भाव रहित यह ज्ञान मेरा, पाषाणवत् ही रह गया।।४५।।

प्रेम भरी के वाक् में, गर राम राम मैं कह देता।
सत्य तुझे बस मान करी, हर बेरी राम मैं कह देता।।४६।।

तो जड़ पुष्प तब पूर्ण ही, चेतन स्वरूप ही हो जाते।
इक पल में यह नाम दीप, विवेकपूर्ण से हो जाते।।४७।।

वहाँ प्रेम का घृत भी पड़ जाता, विवेक से बाती बल जाती।
भावना पूर्ण गर होती, तेरी आरती स्वतः ही हो जाती।।४८।।

पुनि कहूँ अब शक्ति दो, मैं वाक् पाछे तुझे देख लूँ।
जिस जिस ने तोरा नाम लिया, मैं उसमें आप को देख लूँ।।४९।।

गीता शब्द अब जब सुनूँ, मैं वक्ता श्याम को देख लूँ।
ग्रन्थ पढ़ी पढ़ी नहीं पढ़ूँ, रचयिता को मैं देख लूँ।।५०।।

राम की कथनी सुनी सुनी, मैं राम आप को देख लूँ।
उपनिषदन् को जब पढ़ूँ, मैं वक्ता गण को देख लूँ।।५१।।

गर उनके दर्शन कर पाऊँ, आवाहन उनका हो जाये।
तब समझूँ तब समझूँ राम, प्रकट सत्य ही हो जाये।।५२।।

यह विधि मैं न जानूँ, बहुत जन्म मेरा बीत चुका।
अन्तिम पड़ाव जीवन का, आज सामने आ गया।।५३।।

को' जाने फिर कौन घड़ी, अन्तिम स्वासा की होगी।
और पूछूँ को' जन्म मेरी, मिलन की आशा की होगी।।५४।।

इस पल चरण में बैठ करी, तुझे राम राम मैं राम कहूँ।
अब राम राम ही मैं कहूँ, अन्य विधि मैं सब भूलूँ।।५५।।

२६.१०.१९६५

विनम्र श्रद्धांजलि

हमारे प्रिय डॉ. रघु गैंद के लिए..

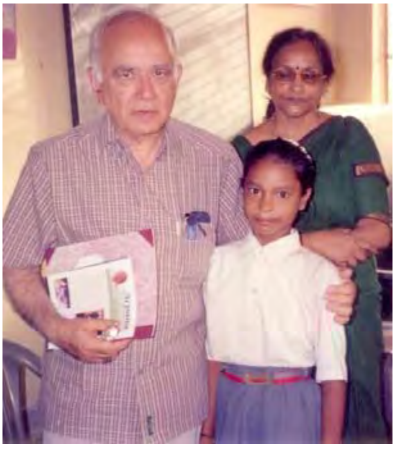

..जो अर्पणा के एक अभिन्न अंग थे!

अर्पणा में हम सभी डॉ. गैंद की कमी को सदा महसूस करते रहेंगे, जो विगत कई वर्षों में हमारे हृदयों के क़रीब आ गये थे। लगभग ४० वर्ष पूर्व से हम उन्हें जानने लगे.. बुद्धिमत्ता एवं आकर्षक व्यकितत्व के धनी.. दुर्बलों के प्रति उनकी दयालुता ने ही उन्हें अर्पणा की ओर आकर्षित किया।

परम पूज्य माँ द्वारा कहे वाक्, "शास्त्र हमें बताते हैं कि दो हाथ से कमा और हज़ार हाथ से बाँट".. उन्होंने अपने जीवन में इस तथ्य को सार्थक करने का भरसक प्रयत्न किया।

अर्पणा चैरिटेबल ट्रस्ट, यू. के. को संगठित करके उन्होंने अर्पणा की सेवाओं का विस्तार करते हुए सैंकड़ों वंचित व्यक्तियों तक पहुँचने के लिये अर्पणा को सक्षम किया, जिनके पास अन्यथा कोई अवसर नहीं था।

अर्पणा अस्पताल के प्रति उनकी विशेष रुचि रही.. एक ऐसा संस्थान, जहाँ ग्रामीण लोगों की सेवा के लिये उत्कृष्ट आधुनिक चिकित्सा सुविधायें उपलब्ध हैं।

उन्होंने अस्पताल की बिल्डिंग को दो मंजिलों से बढ़ा कर इसे एक चार मंजिला अस्पताल बनाने में सहायता की।

इसके साथ साथ आईसीयू को भी नये उपकरणों से सुसज्जित किया एवं अस्पताल चलाने के लिये कई अन्य उपकरण भी उपलब्ध करवाये।

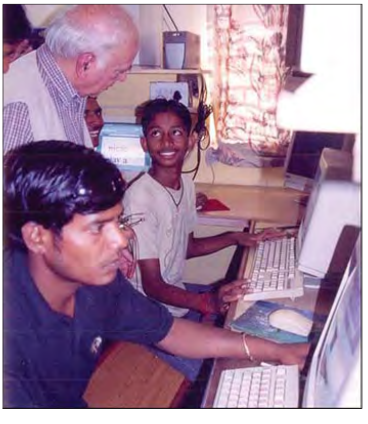

डॉ. रघु गैंद ने न केवल संस्था में ही रुचि ली बल्कि उनको मिलने वाले सभी में व्यक्तिगत रुचि लेकर कितने ही व्यक्तियों को, जिनके पास संसाधन नहीं थे, उनका मार्गदर्शन करते हुए उन्हें सहयोग दिया।

डॉक्टरों एवं नर्सों को भी उनका मैडिकल ज्ञान अपग्रेड करने के लिए वह कई व्याख्यान देते रहे.. विशेष रूप से उनके अपने न्यूरोलॉजी के क्षेत्र में! अपने समृद्ध अनुभव से उन्होंने हम सभी का मार्गदर्शन किया।

कभी तो, हरियाणा के गाँवों के वंचित समुदायों में..

..कभी हिमालय की ऊँचाईयों की बस्तियों तक,

..कभी सैंकड़ों झुग्गी प्रवासियों के बच्चों के लिये,

..उन्होंने पूर्ण विनम्रता के साथ सेवा करते हुए ज्ञान और सेवाओं का प्रसार किया। डॉ. रघु गैंद का सभी के दिलों में महत्वपूर्ण स्थान रहा।

डॉ. गैंद का अर्पणा पर गहरा प्रभाव रहा.. न केवल संस्था के निर्माण में.. बल्कि विशेष रूप से हमारे दिलों एवं हमारे जीवन में भी! उनके साथ हमारी प्यार भरी यादें जुदाई के इस दर्द को मिटा सकेंगी। हम उन्हें अपने हृदयों में सदा संजो कर रखेंगे।

डॉ. गैंद के लिये अर्पणा परिवार के कई सदस्यों ने शोक व्यक्त किया :

डॉ. इला आनन्द : "उन्होंने अर्पणा के लिये बहुत कुछ किया.. अर्पणा यू.के. के माध्यम से एवं स्वयं के व्यक्तिगत प्रयास से भी! जब मेरे पति, डॉ. आनन्द का निधन हुआ तो वह ब्रिटेन से अपनी संवेदना व्यक्त करने के लिये यहाँ भारत में आये। भगवान करें उनकी आत्मा को शान्ति मिले।"

आभा भंडारी : "वह वास्तव में एक दयालु एवं प्रेम से परिपूर्ण व्यक्ति थे। एक सुन्दर दिल, जो ज़रूरतमन्दों के लिए धड़कता था। आज के इस युग में उनके जैसा व्यक्ति मिलना लगभग नामुमकिन है। अर्पणा ने एक बेहतरीन मित्र और हितैषी खो दिया।"

दीपक दयाल : "हम सभी धन्य हैं कि हम उनकी सेवापूर्ण राह पर उनके साथ चल सके, जो हर क़दम पर एक महान प्रेरणा रहे। उनका योगदान विशाल था और ऐसा कोई अवसर नहीं था, जब उनसे सहयोग माँगा गया हो और उन्होंने तुरन्त, अनायास और विनम्रता से ना दिया हो।"

सुषमा अग्रवाल : "हम डॉ. गैंद को हमेशा एक सुन्दर दयालु इन्सान के रूप में याद रखेंगे। पिछली बार जब वह दिल्ली आये तो अपनी शारीरिक अक्षमताओं के रहते हुए भी मोलरबंद आये, जिसके विकास में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्हें सदैव बहुत प्यार से याद किया जायेगा।"

ऐन रॉबिन्सन : "हमारे प्रिय डॉ. गैंद के ना रहने पर हमें गहरा दुःख है। मुश्किलों में घिरे प्रत्येक व्यक्ति के साथ वह सदैव जुड़े रहते थे.. सदैव सहायता के लिये तत्पर.. दयालु एवं सब की देखभाल करने वाले! आश्चर्य होता है कि उन्होंने इतना सब कुछ दूसरों के लिये कैसे किया.. वह सदैव हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग रहेंगे।"

रवि दयाल : "उनकी आत्मा के लिये हार्दिक प्रार्थना! उनका हृदय वास्तव में समाज के कमज़ोर वर्ग के लिये धड़कता था! अर्पणा के साथ उनकी तद्रूपता को हम सदैव याद रखेंगे और प्रेरणा पाते रहेंगे।"

निरिति वैद : "मानवता के लिये सेवापूर्ण उनके जीवन की सुन्दर यात्रा का एक हिस्सा हो कर हम स्वयं को भाग्यशाली मानते हैं। कितना सुन्दर जीवन था.. कितना कुछ सीखने को मिला! हम सब में से प्रत्येक के पास डॉ. गैंद की बहुत सारी व्यक्तिगत यादें हैं। वह वास्तव में अर्पणा का एक अभिन्न अंग थे।" ❖

निष्काम कर्म, यज्ञमय कर्म और पूजा अर्थं कर्म

डॉ. जे के महता

अर्पणा पुष्पांजलि अंक अगस्त १९८८

शास्त्र कहते हैं कि परम तत्व ही सब का आधार है। सब में ओत-प्रोत है और साधकगण इसका अपने हृदय में अनुभव करते हैं। उस तत्व को भगवान स्वरूप, परमात्मा या आत्मा जिस नाम से चाहो पुकार लो। हक़ीक़त यह है कि मैं इस पल तो इस तत्व से अनभिज्ञ हूँ।

भगवान ने गीता में कहा -

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।
मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति।। १५/७

अर्थात् इस देह में यह सनातन जीवात्मा मेरा ही अंश है।

परन्तु इस पल मैं इस श्रद्धा से रहित हूँ कि मैं उसी तत्व का सनातन दिव्य अंश हूँ। यह अनभिज्ञता क्यों? इसका कारण यह है कि मैं एक इस तन के तद्‌रूप होकर 'यह तन ही मैं हूँ' ऐसा समझ रहा हूँ और मान रहा हूँ। यह तो प्रत्यक्ष ही दीख रहा है कि यह तन जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि से ग्रसा हुआ है। यह अमर नहीं है। यह तो मरणधर्मा है। यह

तन परिवर्तनशील, क्षणभंगुर और नाश को प्राप्त होने वाला है। इस बात का भी आभास है कि तन के नाश होने से मेरा नाश नहीं होता। एक शरीर को छोड़ कर मैं दूसरा शरीर धारण कर लेता हूँ, यह भी मैं जानता हूँ।

शास्त्र यह भी कहते हैं, यदि शरीर से संग छोड़ूँ तो ही आत्मतत्व से जोड़ पाऊँगा। यदि इस शरीर को भूलूँ, तो ही आत्मा की स्मृति याद हृदय में जागृत होगी। आत्मा की स्मृति, उससे नाता जोड़ना, हक़ीक़त में तनत्व भाव को छोड़ना है।

जीवन में साधना, भगवान का नाम अथवा परमात्मा से मिलना वास्तव में अपने तन में रहते हुये ही इस तन से दूर हो जाना है। कोई भी कर्म, जो तन से उठाने की अपेक्षा हमें इस तन से बाँध कर हमारे तनोभाव की पुष्टि करता है और तनो अहं का वर्द्धन करता है, वह साधना नहीं हो सकता।

परम पूज्य माँ ने अपने जीवन के प्रमाण से यह साधना का पथ स्पष्ट एवं सप्राण किया है। श्रीमद्भगवद्गीता में प्रतिपादित निष्काम कर्म की प्रणाली और उसके विभिन्न स्तरों को, जिस प्रकार उन्होंने प्रमाणित किया है और अपनी शरण में आये साधकों को जिस प्रकार वह एक पड़ाव से अगले पड़ाव पर ले जा रहे हैं, उस दर्शन पर आधारित यह निष्काम कर्म प्रणाली कुछ ऐसी है -

(क) कर्तव्य-परायणता -

जब तक साधारण जीव में कर्तव्य-परायणता नहीं आयेगी, तब तक हमारी कर्म प्रणाली धर्म पर आधारित न होकर अपनी-अपनी रुचि और मान्यता पर आधारित होगी। हमारे जीवन में राग-द्वेष प्रधान रहेंगे। ऐसी अवस्था में हमारा पुण्य कर्म भी पाप मिश्रित और बंधनकारक ही होगा।

इस कारण हर शास्त्र कर्तव्य पालन की प्रेरणा देता है। भगवान ने भी गीता में आदेश दिया है -

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः।। ३/८

तू अपने नियत कर्म अर्थात् कर्तव्य कर्म को कर। क्योंकि कर्म करना ही श्रेष्ठ है। कर्म का महत्व समझाते हुए उन्होंने फिर कहा-

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः।। ३/१९

इसलिये

अर्थात् तू अनासक्त हुआ निरन्तर कर्तव्य कर्म का अच्छी प्रकार आचरण कर। क्योंकि अनासक्त पुरुष कर्म करता हुआ परमात्मा को प्राप्त करता है।

(ख) निष्काम कर्म-

कर्तव्य का पालन करते हुये, उसमें निष्काम भाव का अभ्यास और उसी की परिपक्वता को प्राप्त करना ही साधना है। दूसरों के प्रति अपना कर्तव्य निभाते हुए, उसके फलस्वरूप अपने लिये कुछ न चाहना ही कर्तव्य-परायणता है। भगवान ने गीता में पुनः कहा -

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।। २/४७

अर्थात् तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों पर कभी नहीं। इसलिये तू कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म में न करने में भी आसक्ति न हो।

दूसरों में ममत्व भाव, उन पर अपना अधिकार उनसे मान की चाहना इत्यादि यह सब राग ही हैं, और ऐसा न होने पर द्वेष का उठ आना ही सकामता का लक्षण है। विवेक रूपा प्रकाश में अपने में इस राग, द्वेष का दर्शन कर और तत्पश्चात् उसे छोड़ने का जीवन में अभ्यास ही कर्तव्य पालन में निष्कामता का प्रमाण है। निष्कामता के अभ्यास के फलस्वरूप जीवन में तमोगुण और रजोगुण गौण होते जाते हैं और सतोगुण बढ़ता जाता है। इसके परिणामस्वरूप जीवन में कई दैवी गुणों का प्राकट्य होता है।

इस स्तर पर साधक सुख का अनुभव करता है और उस की बुद्धि निर्मल हो जाती है। साधारण जीवन की विपरीत परिस्थितियाँ उसे विचलित नहीं करतीं। ऐसी अवस्था में पहुँच कर साधक का कई बार इस स्थिति से संग भी हो जाता है। इसी को अपनी परम स्थिति मान कर वह उसी अहं में टिक जाता है। यह साधु का सतोगुण से संग है। यह साधु का अहं है। इसके कारण उसके हृदय में भगवान का आवाहन नहीं होता और वह राहों में ही भरमा जाता है।

इसी का वर्णन करते हुए भगवान ने गीता में कहा है -

तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम् ।
सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ ।। १४/६

"अर्थात् हे निष्पाप अर्जुन! उन तीनों गुणों में प्रकाश करने वाला निर्विकार सतोगुण तो निर्मल होने के कारण ज्ञान की आसक्ति से अर्थात् ज्ञान के अभिमान से बाँधता है अर्थात् सुख और ज्ञान के संग अर्थात् बंधन के साथ बाँधता है।

(ग) यज्ञमय कर्म-

निष्काम कर्म में भी कर्तापन का भाव तो बना ही रहता है, अपनी याद बनी ही रहती है। इस कारण निष्काम कर्म भी कर्म बीज बनाता है और जन्म-मरण का चक्र चलता ही रहता है। इनके राही स्वर्ग चाहे मिल जाये, पर भगवान नहीं मिलते। हम परम मिलन से वंचित हो जाते हैं। फिर वह कैसे कर्म हैं, जिनको करते हुए भगवान ने कहा कि अनासक्त पुरुष भगवान को प्राप्त करता है.. गीता में ही भगवान ने समझाया -

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर।। ३/९

अर्थात् यज्ञ अर्थ किये हुए कर्म के अतिरिक्त अन्य कर्मों में लगा हुआ मनुष्य कर्मों द्वारा बंधता है, इसलिए हे अर्जुन! 'आसक्ति से रहित हुआ उस परमेश्वर के निमित्त कर्म का भली प्रकार आचरण कर।'

यज्ञमय कर्म का अर्थ व्यावहारिक स्तर पर क्या होगा? पूर्णतया दूसरे के तद्‌रूप हो कर, दूसरे के कल्याण अर्थ कर्म करते हुए, इन कर्मों में अपना प्रेम भर कर, उसमें से अपने लिए कुछ भी न चाह कर, अपने आपको उसमें पूर्णतया भूल जाना ही यज्ञमय कर्म है। इसके अभ्यास में साधक दूसरे से पूर्ण तद्‌रूप हो कर अपने आपको पूर्णतया विस्मृत ही कर देता है। इसकी पराकाष्ठा को प्राप्त हुआ साधक ही तन को छोड़ देता है। यह तन उसका नहीं रहना। ऐसी स्थिति की बात बताते हुए भगवान गीता में कहते हैं -

असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः।
नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां संन्यासेनाधिगच्छति।। १८/४९

फिर कहा, -

सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म तथाप्नोति निबोध मे।
समासेनैव कौन्तेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा।। १८/५०

अर्थात् नैष्कर्म सिद्धि को प्राप्त हो कर मनुष्य ब्रह्म को प्राप्त होता है। यज्ञमय कर्म करने वाले यज्ञशेष का भक्षण करते हैं और देवत्व को प्राप्त होते हैं। दैवी गुण उनके जीवन में यज्ञशेष के रूप में आते हैं परन्तु उनको इन गुणों से भी संग नहीं होता। वह इनमें अहं नहीं भरते। उनके आंतर में प्रकाश इतना होता है कि वह जानते हैं - यह गुण भगवान के हैं और भगवान की कृपा से ही प्रवाहित हो रहे हैं। इस कारण उन गुणों को वह पुष्पवत् भगवान के चरणों में ही चढ़ाते जाते हैं। वह तो स्वयं ही फूल बन कर भगवान के चरणों में ही चढ़ जाते हैं।

यह ही पूजा का भाव है जो यज्ञ के परिणामस्वरूप प्राप्त होता है। साधना काल में परम पूज्य माँ की इस स्थिति की झलक उनके निम्नलिखित भाव में मिलती है -

'मन चाहे फूलों की जा, मैं ख़ुद ही जाये चढूँ।
इक इक अंग तेरा छू लूँ, फिर राममय मैं बनूँ।।

जब 'मैं' मेरी मिट जायेगी, तव चरण धूलि कहलाऊँगी।
जो चरण धूलि तेरी माँगेगा, मैं उसकी हो जाऊँगी।।'

यही साधना की पराकाष्ठा है और यज्ञमय जीवन का पूजा के रूप में अर्पित हो जाना है। ❖

परम पूज्य माँ

अर्पणा
समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
दिसम्बर २०२१

अर्पणा आश्रम के कार्यक्रम

‘उर्वशी’ दिवस

‘उर्वशी’, शास्त्रों के सार को स्पष्ट करने वाला स्वतः स्फुरित प्रवाह, २ अक्तूबर १९५८ को, परम पूज्य माँ के मुखारविन्द से सहज रूप में आरम्भ हुआ। यह दिव्य प्रवाह प्रत्येक जिज्ञासु को प्रबुद्ध करता है और सत्, चित, आनन्द की ओर उनकी यात्रा को सक्षम बनाता है। ‘उर्वशी’, परम पूज्य माँ द्वारा की गई श्रीमद्भगवद्गीता, सभी प्रमुख उपनिषदों एवं अन्य आध्यात्मिक ग्रन्थों की व्याख्या सभी के लिए एक दिव्य संसाधन के रूप में उपलब्ध है। इसमें असंख्य प्रश्नों के उत्तर निहित हैं एवं गहन भक्तिपूर्ण प्रार्थनाओं का एक स्रोत भी!

अर्पणा अस्पताल वार्षिक दिवस

२ अक्तूबर को, अर्पणा के सदस्यों, डॉक्टरों एवं स्टाफ़ ने अर्पणा अस्पताल की ४१वीं वर्षगाँठ मनाई, जिसे ग्रामीण रोगियों को आधुनिक चिकित्सा सुविधाएं उचित दरों पर प्रदान करने के लिए स्थापित किया गया था।

अर्पणा अस्पताल अब योग्य डॉक्टरों और उत्कृष्ट सुविधाओं से सुसज्जित एक बहु-विशिष्ट संस्थान है। कई उदार हृदयी व्यक्तियों / संस्थानों के सहयोग से अर्पणा अस्पताल से भुगतान करने में असमर्थता के कारण कोई रोगी वापिस नहीं जाता।

डॉ. इला आनन्द, FRCOG (लंदन) १९९७, अस्पताल के प्रमुख संस्थापक सदस्य, ने अब ५०० गाँवों से भी अधिक के रोगियों की सेवा करने के लिए अस्पताल की सराहना की।

दिल्ली के कार्यक्रम

अपनी ही माँओं के जीवन में प्रकाश ले आये अर्पणा के छात्र!

डॉ. मृदुला सेठ, प्रोफेसर एवं संयुक्त राष्ट्र की सलाहकार, के मार्गदर्शन में अर्पणा ट्रस्ट ने 'अर्पणा शिक्षा केन्द्र' में नामांकित बच्चों की माताओं के लिए एक वयस्क साक्षरता कार्यक्रम आरम्भ किया।

छात्रों को अपनी माताओं के जीवन में शिक्षा का प्रकाश फैलाने के लिए प्रेरित किया गया जो अनपढ़ हैं परन्तु इस अंधकार से निकलने के लिए आतुर हैं।

लेडी इरविन कॉलेज, दिल्ली द्वारा विशेष रूप से बनाया गया, १३ माताओं के साथ एक विशेष पद्धति का उपयोग करते हुए इस कार्यक्रम को आरम्भ किया गया जो शिक्षार्थी को पठन कौशल में सक्षम बनाता है। इसके लिए पुस्तकें भी प्रदान की गईं।

बच्चे अपनी माताओं को WhatsApp द्वारा भेजी गई ऑडियो रिकॉर्डिंग की सहायता से पढ़ने के लिए उनका मार्गदर्शन करते हैं। महिलाएं सप्ताह में दो बार केन्द्र में आती हैं जहाँ वे अपने कक्षा अध्यापक के साथ अपनी प्रगति पर चर्चा करती हैं।

अर्पणा अपने शैक्षिक कार्यक्रमों में सहायता करने के लिए एस्सेल फाउंडेशन, नई दिल्ली, केयरिंग हैंड फॉर चिल्ड्रेन, यूएसए एवं अर्पणा कनाडा का अत्यन्त आभारी है।

अर्पणा अस्पताल

एक अन्य विशिष्टता - लेज़र सर्जरी

डॉ. रमेश अग्रवाल, (DNB, FMAS, MNAMS) ने कुटेल गाँव के निवासी २३ वर्षीय सुमित की लेज़र सर्जरी की, जिसकी उसे अत्यन्त आवश्यकता थी। यह सर्जरी पीड़ा से मुक्त, बिना किसी कट, घाव या निशान की होती है।

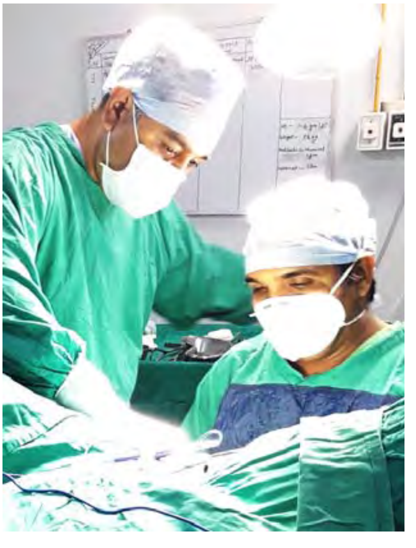

प्लास्टिक सर्जरी

६ साल की हिमानी, करनाल के एक गाँव कम्बोपुरा में रहती है। खेलते समय हुए एक हादसे में उसकी जीभ लगभग कट चुकी थी। डॉ. अग्रवाल ने हिमानी के ज़ुबान के घाव की प्लास्टिक सर्जरी की। एक हफ्ते के बाद वह छोटी सी लड़की सामान्य रूप से खाना खाने के लिए सक्षम हो गई।

बैज नाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, नई दिल्ली, का ग़रीब रोगियों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए अर्पणा का हार्दिक आभार।

ग्रामीण सशक्तिकरण

अपने स्वयं के कौशल और व्यवसाय का निर्माण करते विकलांग व्यक्ति

२० विकलांग व्यक्तियों ने 'कल्पना चावल स्किल सेंटर', करनाल द्वारा चलाये गये खाद्य संरक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। अर्पणा द्वारा एक सभा आयोजित की गई जहाँ वे आजीविका के अन्य विकल्पों को जान सके। वहाँ पर अन्य चर्चाएं भी की गईं और कई व्यक्तियों ने स्वरोज़गार के लिए व्यावहारिक विचार बताये जैसे कि डेयरी, अचार बनाना, सॉस एवं फास्टफूट आदि.. इनमें से पाँच व्यक्ति अर्पणा की कार्यशाला में अपनी योजनाओं को व्यावहारिक रूप देने के लिए भी आये।

श्री ईश भटनागर और श्रीमती अरुणा दयाल ने उन्हें व्यवसाय स्थापित करने एवं उनके लिए संसाधनों की आवश्यकता के विषय में विस्तार से बताया।

विकलांग व्यक्तियों के जीवन में बदलाव के प्रयास!

२६ नवंबर को, अर्पणा के कई विकलांग संगठनों (डीपीओ) के सदस्यों के जीवन अनुभव मनाने के लिए गाँव बुढ़ाखेड़ा के अर्पणा के केन्द्र में एक मेले का आयोजन किया गया।

निःशक्तजनों ने उत्साहपूर्वक गतिविधियों में भाग लिया जैसे-

- कबड्डी प्रतियोगिता।
- पानी से भरे ३ मटकों (मिट्टी के बर्तन) के साथ दौड़।
- पेटिंग प्रतियोगिता।
- डिज़ाइनदार मेहंदी लगाना।
- रंगोली चित्रण।
- मनका सूत्रण प्रतियोगिता।
- हमारे एक विकलांग सदस्य के जीवन की सच्ची कहानी का मंचन कार्यक्रम।

डिप्टी सीएमओ ने इस सभी के आयोजन के लिये डीपीओ के संगठन को बधाई दी और सभी सदस्यों के जीवन को बदलने के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने स्पष्ट किया कि निःशक्तजन किसी भी व्यक्ति की तरह ही मूल्यवान हैं, यह उल्लेख करते हुए कि पैरा-ओलंपिक में जीते गये स्वर्ण पदक, नियमित ओलंपिक में जीते गए स्वर्ण पदकों के समान हैं।

ग्रामीण विकास कार्यक्रमों को समर्थन देने के लिए इंडिया डिवलपमेंट एण्ड रिलीफ फंड (यूएसए) एवं टाइड्ज़ फाउंडेशन (यूएसए) को हमारी गहरी कृतज्ञता!

हिमाचल की वादियाँ

एक महीने का कार्य, मात्र २ घंटे में!
हिमाचल में किसानों को मिलीं मक्का शेलर मशीनें

८ नवंबर को अर्पणा के 'रावी घाटी किसान उत्पादक संगठन' (एफपीओ) को ६ मक्का शेलर मशीनें, बैजनाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा जटकरी क्षेत्र के ७ किसानों को वितरित की गईं।

किसानों को मशीनों द्वारा मक्के की गुठली एवं दानों को अलग करके दिखाया गया जिसे देख कर वह बहुत ख़ुश हुए। सभी किसानों को स्वयं मशीन चलाना सिखाया गया। इन मक्का शेलर मशीनों के वितरण से पहले १४ किसानों को उनके रखरखाव एवं सुरक्षा उपायों के विषय में सिखाया गया.. जिनका पालन करने की अति आवश्यकता होती है। पहले किसानों को मक्का निकालने में एक महीने का समय लगता था और अब यह काम मात्र २ या ३ घंटे में पूरा हो सकेगा।

हिमाचल प्रदेश में स्वास्थ्य और विकास कार्यक्रमों के अनुदान के लिए टाइड्ज़ फाउंडेशन (यूएसए), बैजनाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट (नई दिल्ली) और श्री रवींद्र बहल (नई दिल्ली) को हमारी गहरी कृतज्ञता!

It is Your compassionate support that sustains Arpana's Services!

Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust are both approved under Section 80G of the Income Tax Act, 1961, giving 50% tax relief for donors in India.

FCRA Registration No. for Arpana Trust is 172310001

FCRA Registration No. for Arpana Research & Charities Trust is 172310002

Send your contribution for dissemination of humane values & medical and community welfare services in Delhi to:

Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132037

Send your contributions for health & development services in Haryana & Himachal to:

Arpana Research & Charities Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132037

Send contributions in USA to:

Mr. Vinod Prakash, President, IDRF, 5821 Mossrock Drive, North Bethesda, MD 20852
Mr. Jagjit Singh, AID for Indian Development, 84 Stuart Court, Los Altos, CA 94022-2249

Send contributions to Arpana Canada:

c/o Mrs. Sue Bhanot, 7 Scarlett Drive, Brampton, Ontario L6Y 3S9, Canada

Please let us know by email or telephone, whenever you transfer funds to Arpana.

Information & Resources Office: 91-184-2390905 **Executive Director:** 91-9818600644
emails: **at@arpana.org and arct@arpana.org**

Contact person: Mrs. Aruna Dayal, Director Development. Mobile 91-9991687310
Websites: **www.arpana.org** **www.arpanaservices.org**